भारत ज्ञान विज्ञान समिति

मुर्गी बेचने वाली

एक चीनी कहानी

मुर्गी बेचने वाली लड़की

एक चीनी कहानी

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति ने 'सर दोराबजी टाटा वैलफेयर ट्रस्ट' के सहयोग से किया गया है। इस आंदोलन का मकसद आम जनता एवं बच्चों में पठन-पाठन संस्कृति विकसित करना है।

मुर्गी बेचने वाली लड़की
चीनी कहानी
Murgi bechane wali Ladki
Chini Story

हिंदी अनुवाद
अरविन्द गुप्ता
Hindi Translation
Arvind Gupta

श्रृंखला संपादक
मनोज कुलकर्णी
Series Editor
Manoj Kulkarni

ग्राफिक्स
प्रमोद मिश्रा
Graphics
Pramod mishra

आवरण एवं रेखांकन
मनोज कुलकर्णी
Cover & Illustration
Manoj Kulkarni

प्रथम संस्करण
मार्च 2014
First Edition
March 2014

सहयोग राशि
20. रुपये
Contributory Price
Rs. 20.00

मुद्रण
अवनीत ऑफसेट
दिल्ली - 32
Printing
Avneet Offset Press
Delhi - 32

सहयोग : टाटा वैलफेयर ट्रस्ट सोसाईटी, मुंबई

ISBN : 978-93-81811-64-1

Publication and Distribution
Bharat Gyan Vigyan Samiti
59/5, IIIrd Floor, Kalkaji, New Delhi 110019
Phone : 011 - 26463324, Fax : 91 - 011 - 26469773
Email : bgvs_delhi@yahoo.co.in, bgvsdelhi@gmail.com

मुर्गी बेचने वाली लड़की

एक चीनी कहानी

एजेलिया के फूलों की बहार हुई थी, उन्हीं दिनों मैं कृषि-विज्ञान अकादमी के अनुसंधान-कर्ताओं के साथ ताप्ये के पर्वतीय इलाके में आया था।

मैं जब भी किसी ग्रामीण इलाके में जाता हूं, वहां के हाट-बाजारों में जरूर घूमता हूं। जहां विभिन्न तरह के ग्रामीण इकट्ठा होते हैं। उस जीवन को नजदीक से देखने का मौका मिलता है। लगता है जैसे ग्रामीण प्रथाओं, परम्पराओं एवं परिधानों के बारे में जानकारी देने की कोई प्रदर्शनी लगी हुई है।

खेद की बात है कि दूर-दराज़ के इस पहाड़ी इलाके में हाट-बाजार नहीं, बल्कि केवल "ओस मेला" लगता है। मतलब यह कि यह मेला इतने कम समय का होता है, जितनी कि ओस। जो दिन आते ही अदृश्य हो जाती है। मेला थोड़े समय ही सही, मैं तो वहां घूम आऊं।

मुंह अंधेरे ही मैं उठ गया। ओस से पैर गीले न हो जाएं, इसलिए मैंने रबर के जूते पहन लिए। पहाड़ पर चढ़ते-उतरते, लगभग चार किलोमीटर का रास्ता तय करने के बाद में "फडश्वेरूवी" नाम के एक छोटे से गांव आ पहुंचा। हां, ओस मेला लग चुका था। पत्थर के पटियों वाली सड़कों के दोनों किनारों पर तरह-तरह दुकानें थीं। बर्फ जैसे सफेद चावल की। सुनहरी मकई की। सूरजमुखी के बीजों की। कमलगट्टों की।

छटपटाती हुई मछलियों की। बिल्ली के बच्चों की। शताबरी के सुगंधित फूल बेचने वाली लड़कियों ने दुकानें नहीं लगाई थीं। वे तो फूलों के गुच्छे उठाए इधर-उधर घूमती दिखाई दे रही थीं...

सहसा एक मुर्गी बेचने वाली लड़की ने मेरा ध्यान खेंचा। वह सात-आठ वर्ष की होगी। सफेद कमीज, गहरे नीले रंग की पतलून और गले में लाल स्कार्फ। गोल-मटोल चेहरा आधे चांद सी भौंहें, दो बोलती आंखें...! वह उकडू बैठी थी। सामने तीन मुर्गियां रखे थी। सफेद परों और लाल कलगियों वाली, तीन मोटी मुर्गियां। जो कुक-कुक कर रही थीं। लड़की रह-रह कर उन पर हाथ फेरती, उन्हें गोद में उठाकर अपने मुंह के पास ले जा रही थी..

मेले में और कई लोग तो केवल मुर्गे बेचने की ही दुकानें लगाए थे। मुर्गियां बेचने वाले भी एकाध अवश्य थे, लेकिन उनकी मुर्गियां देखते ही मालूम पड़ जाता कि ये बीमार या अंडा न दे सकनेवाली मुर्गियां हैं।

लड़की की मुर्गियों ने मेरा ध्यान खींचा। लड़की के हाव-भाव को देखकर मेरे मन में उसके प्रति सहानुभूति का भाव आया। इतना ही नहीं, मैं इस लड़की के संबंध में सोचने लगा...

''अरे, ये तो तीन अंडा देने वाली मुर्गियां हैं न?'' एक बुढ़िया ने पूछा। ''हां, काकी।'' लड़की ने उत्तर दिया, ''आप इन्हें छूकर देखिए, इनके पेट में अंडे हैं!

बुढ़िया ने एक-एक मुर्गी को पकड़ कर, चतुराई से मुर्गियों की पूंछ के नीचे दबाया और फिर सिर हिलाकर कहा, ''हां, तो एक के क्या दाम होंगे?''

''पाच युवान।''

''हरेक लगभग डेढ़ किलो की है। दाम तो ज्यादा नहीं हैं!'' बुढ़िया लडकी की ओर मुस्कुराई और मुर्गियां जमीन पर रखकर लाचारी जताकर चली गई।

मेरे मन में हलचल मच गयी। अब वसन्त ऋृतु है। मुर्गियों के अंडे देने का मौसम, ये तीन मुर्गियां ऐसी हैं, जो अंडा दे सकती हैं। लड़की के घर में पैसे की सख्त जरूरत न होती, तो मुर्गियां बेचने की नौबत न आती। यहां

तो पहले से ही उत्पादन- जिम्मेदारी- व्यवस्था लागू है। प्रत्येक किसान परिवार खाने-पीने के लिए चिंतित नहीं रहता। क्या इस लड़की के घर में कोई विपत्ति आई है? आग लग गई है? जिससे कपड़े और अनाज जल गया है? या कोई बीमार पड़ गया है, जिसे अस्पताल में दाखिल करने के लिए पैसों की कमी है? या फिर...

मैंने तमाम संभावनाओं पर विचार किया। मगर, किसी को भी वास्तविक साबित करने में असमर्थ रहा। तब भी मैं दावे से कह सकता हूं कि इस लड़की के घर में अवश्य ही कोई विपदा आई है, वरना उसे अंडा देने वाली मुर्गियां बेचनी नहीं पड़तीं। पूछने का जी भी हुआ, लेकिन मैं एक अजनबी ठहरा, दूसरे के घाव कुरेदने की क्या जरूरत..

इतने में एक मैस-अफसर सा दीखने वाला आदमी मुर्गियां खरीदने आया। उसके पास एक साइकिल थी। जिसके पिछले मडगार्ड पर लिखे शब्दों से मालूम हुआ कि यह श्याड-सरकार का मैस-अफसर था। साइकिल के कैरियर पर एक काफी बड़ी टोकरी लटकी थी। जिसमें अभी-अभी खरीदी हुई मछलियां,

झींगे, सब्जी, कमलकंद वगैरह रखे थे...

"आहा, ये मुर्गियां तो बहुत मोटी हैं!" उसने साइकिल खड़ी की और झुककर एक मुर्गी उठाकर, उसके वजन का अनुमान लगाया : ''क्या दाम है?"

"एक के पांच युवान।"

"कम नहीं हो सकता?"

"ये तो अंडा देने वाली मुर्गियां हैं..."

"ये अंडा दें या न दें, मेरी बला से..."

मैंने देखा कि लड़की सिहर उठी। उसने घबराकर पूछा

"तो आप किस लिए..."
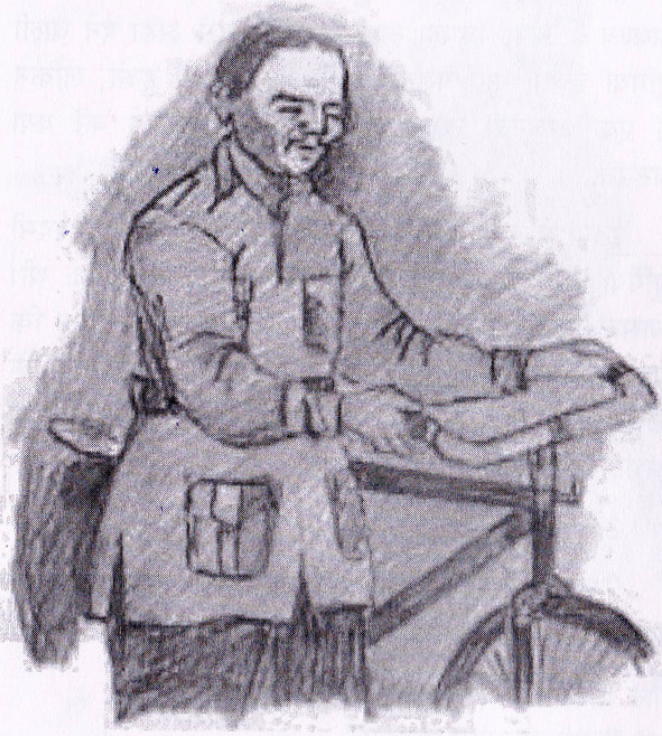
"दावत देनी है! जानती नहीं काउंटी का जांच-दल आज ही तीसरे पहर लौट जाएगा?" उस मैस-अफसर ने अपना बड़प्पन जताते हुए कहा, जैसे वह लड़की को धिक्कार रहा हो कि उसे इतनी बड़ी बात भी मालूम नहीं।

"मैं नहीं बेचूंगी, नहीं बेचूंगी।" लड़की ने उसके हाथ

से मुर्गी छीन ली। मैंने देखा कि मुर्गी की टांगें कांप रही थीं और लड़की का हाथ भी।

"बस, बस। हम भाव-ताव नहीं करेंगे। हरेक मुर्गी के लिए पांच युवान देंगे..."

"दस युवान भी दें, तो भी नहीं बेचूंगी..." लड़की ने तीनों मुर्गियों को अपनी बाहों में जकड़ लिया। उन्हें बचाए रखने की पूरी कोशिश करने लगी, जैसे उसे आशंका रही हो कि वह आदमी कहीं इन मुर्गियों को जबरन न उठा ले जाए।

"क्यों-"

"ये मुर्गियां अंडा देती हैं। इन्हें खरीदकर आप पालना चाहते हैं, तो बेचूंगी। यदि आप इनको खाना चाहते हैं, तो नहीं बेचूंगी।"

"इसका तुम्हें क्या? दस सालों से मैं यह काम कर रहा हूं। तुम जैसी बेचने वाली तो पहले कभी नहीं मिली। बड़े शौक से इन्हें अपने पास रखो!" मैस-अफसर को लड़की की बात विचित्र लगी। वह झुंझलाकर चला गया।

मेरे मन में लड़की के प्रति आदर भाव पैदा हुआ। कितनी दयालु लड़की है! मोटर-गाड़ियां चलाते हुए जहां-तहां दुनाली बन्दूकों से पशु-पक्षियों का शिकार करते रहते बड़े अधिकारियों और धनवानों के मुकाबले इसका मन कितना अधिक उदात्त और उदार है! मेरे मन में यह असंगत

विचार भी आया कि सारी दुनिया के लोग इस लड़की का अनुकरण करने लगे, तो धरती पर न मार-काट हो न युद्ध...लेकिन मुर्गियों के बदले में पैसे मिले बिना इसकी तंगी कैसे दूर होगी? मैं फिर चिंतित हो गया।

मैंने मेले के तीन चक्कर लगाए, पर मेरी नज़र लड़की पर से कभी नहीं हटी। वह और उसकी तीनों मुर्गियां वहीं थीं...। सूर्योदय होने लगा। ओस मेला समाप्त होने को आया। एकाएक एक बूढ़ा किसान कंधे पर थैला लटकाए लड़की के सामने आ खड़ा हुआ। उसने कहा कि वह कुछ अंडा देने वाली मुर्गियां खरीदना चाहता है।

उसके घर सभी मुर्गियों को लकड़बग्घा दबोच ले गया था...। सुनते ही लड़की ने तीनों मुर्गियों को उसे हाथ में पकड़ा दिया

और उन्हें छूकर देखने को कहा। बूढ़े ने कहा ''मैं तीन मेलों का चक्कर काट आया। छूकर देखने की जरूरत नहीं। एक ही नजर में मैं पहचान गया था कि ये अंडा देने वाली मुर्गियां हैं। एक का

कितना लोगी?''

''किसी ने पांच युवान देने की बात कही थी। लेकिन मैंने बेचा नहीं। आप ईमानदार ग्राहक हैं, साढ़े चार युवान ही दे दें।''

बिना मोल-भाव किए बूढ़े ने पैसे दे दिए और मुर्गियों को उठाकर चला गया।

लड़की ने पैसे जेब में रखे। जैसे वह किसी भारी बोझ से मुक्त हो गई थी। उसने कुक-कुक कर रही तीनों मुर्गियों से कहा ''जाओ, जाओ! काका तुम लोगों के साथ बुरा सलूक नहीं करेंगे''

लड़की ने अपनी आंखें पोंछीं। उसकी आंसू भरी आंखे दूर होती जा रही उन मुर्गियों पर टिकी थी।

उसकी बातों और हाव-भाव से मुझे उसके और मुर्गियों के बीच ''साथियों'' सी गहरी दोस्ती महसूस हुई, क्योंकि ग्रामीण लड़कियों के लिए मुर्गियां, बत्तखें, बिल्लियां और कुत्ते ही तो खिलौने होते हैं। उनसे अलग होने पर उसका मन दुखे हुए बिना कैसे रह सकता है? मुझसे रहा नहीं गया। लड़की के सामने जाकर मैंने पूछा, ''इतनी अच्छी मुर्गियां थीं। उन्हें बेचने की क्या जरूरत आ पड़ी थी? क्या घर में कोई बात हुई है?''

''जी एक खुशी की बात.....................''

''खुशी की बात?''

''जी हां,'' लड़की हंस दी, ''मेरे माता-पिता अध्यापक हैं। पिताजी ऊहान विश्वविद्यालय में पढ़ाते हैं और मां गांव के ही प्राइमरी स्कूल में। इस बार पिताजी लेक्चरर बन गये है।

हम मां-बेटी को ऊहान शहर जाकर बसने की इजाज़त मिल गई है। शहरों में मुर्गियां पालना मना है। हमने मुर्गियां अपने पड़ोसियों को देनी चाही, लेकिन उन्होंने नहीं लीं। सुना है कि शहर में पीने के पानी के लिए भी पैसा देना पड़ता है। इसीलिए हमें उन्हें बेचने का विचार आया। हुं, हूं...!''

''इन दिनों मां तो मारे खुशी के रोती ही रहीं।''

लड़की ने बड़ी मासूमियत से बताया, ''वे बड़बड़ाती रहीं, वह दिन आखिर आ ही गया, जिसकी पिछले बीस सालों से हम राह देख रहे थे।'' यह कहते-कहते उनकी आंख छलछला आती थी। चाचाजी, बताइए तो, वैसे तो प्रसन्नता के मारे लोग हंसते हैं, मेरी मां रोने क्यों लगी?''

''अभी तुम भी तो रोई थीं न?''

"ही-ही! उन मुर्गियों से अलग होने से मेरा मन दुखी था। उन्हें मैंने इतना बड़ा जो किया था। मेरी मां को भी इसका दु:ख है.............अच्छा, नमस्ते चाचाजी!" लड़की उछलती-कूदती चली गई।